डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०अ०सं०महाविद्यालय० फुलवरिया
14/06/21 प्रतियाँ

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि०—पत्र

'पद'

कवि — गोस्वामी तुलसी दास

कबहुँक अंब अवसर पाइ।
मेरिऔ सुधि द्याइबी कछु करुन-कथा चलाइ॥
दीन, सब अँगहीन, छीन, मलीन, अघी अघाइ।
नाम लै भरै उदर एक प्रभु-दासी-दास कहाइ॥
- - - - - - - - - - - - - -
- - - - - - - - - - - - - -
तरै तुलसीदास भव तव-नाथ-गुन-गान गाइ॥

भावार्थ

प्रस्तुत पंक्तियाँ संत शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास रचित 'विनय-पत्रिका' काव्य कृति से ली गयी है। विनय पत्रिका की रचना करने के पीछे कवि का उद्देश्य यह है कि कविता रूपी पत्र के माध्यम से अपनी दीनता, पीड़ा व्यथा को प्रभु श्रीराम के चरणों में पहुँचना है। इसमें सभी देवों की स्तुतियाँ की गयी है और उन्हीं के माध्यम से प्रभु के प्रति भक्ति-भावना भी प्रदर्शित की गयी है।

उपर्युक्त पंक्तियों में माता सीता की वंदना करते हुए कवि विनती करता है कि हे माँ! कभी अवसर पाकर मेरी विनती प्रभु श्रीराम के चरणों में प्रस्तुत करना। मेरी करुण कथा की चर्चा करते हुए मेरे प्रति प्रभु-कृपा के लिए याद दिलाना। उन्हें याद दिलाते हुए कहियेगा कि आपकी दासी का एक भक्त आपका नाम-जप एवं भजन के द्वारा अपनी जीविका चला रहा है। मेरी दीन-हीन अवस्था की सुधि श्रीराम को छोड़कर और कौन लेगा? श्रीराम की कृपा अगर हो जायेगी तो मेरी दीन-दशा सुधर जायेगी। हे जगत की जननी, मेरी तुमसे विनती है कि अपनी कृपा कर मुझ असहाय की सहायता करें। तुलसीदास भवसागर पार कराने वाले प्रभु श्रीराम का गुण-गान करते हुए दीनता से मुक्ति के लिए प्रार्थना करते हैं।

सद्गुणों को ग्रहण करो। शक्ति दूसरों को कष्ट पहुँचाने के लिए नहीं बनी है और न ही मिली है वरन् सुख पहुँचाने के लिए मिली है। जहाँ दूसरों की निन्दा हो वहाँ मौन धारण कर लेना चाहिए। आत्मा का अपमान न करते हुए सत्य-पथ का पथिक बनना चाहिए। सत्य में बहुत बड़ी शक्ति छिपी है। अतः सत्य से विचलित नहीं होना चाहिए।

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, प्र० द्वि० - पत्र

'पथिक' खण्ड काव्य

कवि - श्री रामनरेश त्रिपाठी

डॉ देवचरण प्रसाद
प्र०सं०प्रो०व्या०
राज०सं०महा०वि०
१०/०६/२१ पुरैनियाँ

प्रश्न :- सज्जन व्यक्ति अपनी सद्बुद्धि से किस प्रकार अपने शत्रु को वश में कर लेते हैं? इस सम्बन्ध में कवि का क्या विचार है, उल्लेख करें।

उत्तर :. कवि श्री रामनरेश त्रिपाठी जी ने जीवन के महत्व को स्पष्ट करते हुए कहा है कि सज्जन व्यक्ति अपनी सद्बुद्धि और सद्गुणों से अपने शत्रु को भी वश में कर लेते हैं। क्योंकि सद्बुद्धि और सद्गुण में ऐसी शक्ति निहित है कि वह बिना किसी प्रहार का शत्रुओं का दिल जीत लेती है।

पथिक उपस्थित नवयुवकों को कहता है कि अगर कोई अमूल्य मणिमाला को कौड़ी से बदलना चाहे, तो उससे बढ़कर बड़ा मूर्ख कौन होगा। अर्थात् देश-भक्ति, देश सेवा अमूल्य मणियों की माला है तो इसके प्रति दान स्वरूप कौड़ी के समान यश और प्रसिद्धि आदि की आकांक्षा नहीं करनी चाहिए। रक्त-पात तो पशु करते हैं। जो रक्त बहाने में विश्वास करते हैं, वे मन ही-मन भय खाते हैं, मन की कायरता से ही रक्त पात मचाकर शान्ति की स्थापना का प्रयास किया जाता है। अपने सत् चरित्र से, अपने सुन्दर स्वभाव से शत्रु को मित्र बना लेने में ही महानता है। दूसरे का रक्त बहाकर कभी भी मित्र नहीं बनाया जा सकता है। जब मनुष्य का सितारा अस्त होने लगता है, तब उसके मन में क्रोध उत्पन्न होता है जो पाशविक प्रवृत्तियों को जन्म देता है। क्रोध के उत्पन्न होते ही दया-सुविचार और न्याय का मार्ग अपवित्र हो जाता है। ऐसे मार्ग को ग्रहण करने वाला पहले अपने आधार को नष्ट कर लेता है।

मनुष्य के जीवन में उसका सबसे बड़ा शत्रु क्रोध है। अगर मनुष्य अपने क्रोध पर विजय प्राप्त कर ले तो वह जगत विजेता भी बन सकता है। मनुष्य को चाहिए कि वह अपने को क्रोध, ~~को~~ आलस्य और छल से बचाये। इससे बचते हुए आत्मिक उत्थान के लिए

शेष आगे -

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०—पत्र

डॉ० देव शरण प्रसाद
(एसो० प्रो० हिंदी)
रा० उ० सं० महाविद्यालय (सुलतानगंज)
14/06/21 प्रेषित

जयद्रथ - वध

कवि - मैथिलीशरण गुप्त

बोले वचन तब पार्थ उनसे लीन होकर रोष में —
"क्या निज जनों का त्राण करना सम्मिलित है दोष में?
मेरा नियम यह है, जहाँ तक मेरा बाण जायेगा,
अपने जनों को आपदा से वह अवश्य बचाएगा।

भावार्थ

प्रस्तुत पद्यांश जयद्रथ-वध के षष्ठ सर्ग से ली गई है। शत्रु पक्ष के महारथियों के वचनों को सुनकर अर्जुन क्रोध में भर गए। कवि मैथिलीशरण गुप्त कहते हैं कि शत्रुओं की बातों को सुनकर अर्जुन क्रोध से भर जाते हैं। क्रोध में ही वे कहते हैं कि क्या अपने लोगों की रक्षा करना पाप माना जायेगा। ऐसा मैं नहीं मानता हूँ। मेरा यह नियम है कि जहाँ तक भी मेरा बाण जा सकता है वहाँ तक वह अपने लोगों को मुसीबत से अवश्य ही बचायेगा।

कवि कहना चाहता है कि कौरवों की सेना की ओर से जो भी पाण्डवों की सेना पर आरोप लगाया जा रहा है, वह निराधार है। अर्जुन संसार सबसे श्रेष्ठ धनुर्धर है। उसे वह शक्ति प्राप्त है कि उसके धनुष से निकला हुआ बाण जहाँ तक जायेगा शत्रुओं का नाश कर देगा। अर्जुन ने तो अपना धर्म निभाया है। अपने जनों की रक्षा करना उसका परम कर्तव्य था। वह अपने कर्तव्य को निभाने में पूर्णतः सफल हुआ है। इसलिए शत्रुओं का कोई भी आरोप उचित नहीं है।